Vol 9, Issue 9, 2026 **Impact Factor: 8.535** DOI: https://doi.org/10.31426/ijamsr.2026.9.9.9712

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

गैरसरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत विवाहित एवं अविवाहित महिला शिक्षकों की व्यवसायिक कार्य संतुष्टि का अध्ययन

शोधार्थी – शिवेन्द्र प्रताप सिंह

शिक्षा संकाय, साईं नाथ विश्वविद्यालय, रांची

डॉ0 योगेन्द्र नाथ तिवारी, असिस्टेन्ट प्रोफेसर

शिक्षा संकाय, साईं नाथ विश्वविद्यालय, रांची

सारांष– प्रस्तुत षोधपत्र में बताया गया है कि किसी भी समाज की उन्नति का प्रत्यक्ष संबंध शिक्षकों से होता है। समाज में शिक्षक एक ऐसा वर्ग है, जिसके द्वारा समाज को एक नयी दिशा मिलती है। इनके द्वारा समाज ही नहीं पूरा देश उन्नति की ओर अग्रसर होता है। आज समाज में सबसे दयनीय स्थिति शिक्षक की है, क्योंकि वह सदैव स्वाभिमान, सम्मान और गौरव के साथ जीना चाहता है। उसने सदैव देना सीखा है, लेना नहीं।

अतः शिक्षक त्रिदेव कहा जाता है, लेकिन उसे मिलने वाली सुविधायें नगण्य है। वह मानसिक रूप से अपने कार्यों से असंतुष्ट रहता है। शिक्षकों के असमायोजन एवं असन्तोष का मूल कारण उनकी आकांक्षाओं का पूर्ण न होना। प्राथमिक शिक्षक अपने साधन, वातावरण एवं क्षमताओं की सीमा देखकर प्रगति के शीर्ष पर बढ़ने के लिए सोचने लगता है जिससे व्यवसायिक असंतुष्टि बढ़ती रहती है।

प्रस्तावना

शिक्षक समाज का अग्रणी सदस्य होता है अतः उसका स्थान श्रेष्ठ है। शिक्षक ही शिक्षणोपयोगी एवं प्रेरणादायक वातावरण को तैयार करता है जिसका वह पूर्ण तत्परता के साथ निर्वाह करता है। निःसंदेह इस कार्य सम्पादन में उसे कई परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है। जो कि उसके सामाजिक व आर्थिक दोनों ही स्थितियों को प्रभावित करती है। आज का शिक्षक समाज अपने विसंगतियों से जूझ रहा है जिससे शिक्षकों में असंतुष्टि की भावना बढ़ती जा रही है।

अतः यदि हम चाहते है कि आज का शिक्षक संतुष्ट हो एवं अपने आपको समायोजित कर सके तो हमें शैक्षिक संस्थाओ के वातावरण एवं व्यवस्थाओं में सार्थक परिवर्तन लाना होगा। एक संतुष्ट एवं समायोजित शिक्षक ही सही ढंग से अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए उचित शिक्षा प्रदान कर सकता है। किसी भी व्यवसाय में व्यक्ति ईमानदारी एवं निष्ठापूर्वक तभी कार्य कर सकता है। जब वह अपने व्यवसाय से पूर्ण रूप से संतुष्ट होगा।

प्राथमिक शिक्षा में शिक्षक का महत्व –

जिस प्रकार किसी भवन की दृढ़ता और सुन्दरता में उस भवन को बनाने वाले कारीगर का योगदान होता है। उसी प्रकार बच्चों को शिक्षा प्रदान करने वाले शिक्षक का योगदान षिक्षा में होता है, हम कितने भी संसाधन उपलब्ध करा दें पर यदि अच्छे व प्रभावी शिक्षक उपलब्ध नहीं है, तो समुचित शिक्षा प्रदान करना सम्भव नहीं है। किसी भी शिक्षा की नींव प्राथमिक शिक्षा होती है, यदि योग्य शिक्षक ही उपलब्ध न होगें तो शिक्षा किस प्रकार प्रदान की जायेगी, अतः प्राथमिक शिक्षक का जीवन में महत्वपर्ण स्थान है।

जवाहर लाल नेहरू के अनुसार –

शिक्षक चार प्रकार के होते है– सामान्य शिक्षक वह है जो केवल कहता है। अच्छा शिक्षक वह है जो समझता है। उत्तम शिक्षक वह है जो प्रदर्शित करता है और महान शिक्षक वह है जो विद्यार्थी को प्रेरणा देता है।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

शिक्षकों के व्यावसायिक संतुष्टि की संकल्पना

व्यवसायिक संतुष्टि एक प्रकार की प्रेरणा है जिसके कारण कार्यकर्ता अपने कार्य को सम्पादित करने में बहुत आनन्द की अनुभूति करता है। यह संतुष्टि वैयक्तिक स्तर पर महसूस की जाती है और इसकी व्याख्या सामूहिक संदर्भ में किसी भी रूप में नहीं की जा सकती।

आज का शिक्षक समाज अपने विसंगतियों से जूझ रहा है जिससे शिक्षकों में असंतुष्टि की भावना बढ़ती जा रही है। अतः यदि हम चाहते है कि आज का शिक्षक संतुष्ट हो एवं अपने आपको समायोजित कर सके तो हमें शैक्षिक संस्थाओ के वातावरण एवं व्यवस्थाओं में सार्थक परिवर्तन लाना होगा। एक संतुष्ट एवं समायोजित शिक्षक ही सही ढंग से अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए उचित शिक्षा प्रदान कर सकता है। किसी भी व्यवसाय में व्यक्ति ईमानदारी एवं निष्ठापूर्वक तभी कार्य कर सकता है। जब वह अपने व्यवसाय से पूर्ण रूप से संतुष्ट होगा।

व्यवसायिक संतुष्टि की कुछ महत्वपूर्ण परिभाषायें

पेज तथा थामस के अनुसार, ''व्यवसाय–संतुष्टिकरण वह प्रक्रिया है जिसमें एक

व्यक्ति अपने कार्यों के विषय–सूची और परिवेश के द्वारा कितना संतुष्ट है तथा अपने कार्यशर्तें और धीमे कार्य संतुष्टि से कितना असंतुष्ट है।

ब्लूम तथा जेलर के अनुसार, ''व्यवसाय संतुष्टिकरण कार्य करने वाले के उसके कार्य के प्रति शिथिलता, कारकों के प्रति सम्बन्ध एवं साधारणतया जीवन के प्रति विभिन्न स्थितियों का परिणाम है।

व्यवसायिक संतुष्टि को प्रभावित करने वाले कारक

व्यवसायिक संतुष्टि को प्रभावित करने वाले कारकों को अध्ययन की दृष्टि से तीन मुख्य भागों में विभाजित किया जा सकता है।

- वैयक्तिक कारक
- कार्य से सम्बन्धित कारक
- प्रबन्धक द्वारा नियंत्रित होने वाले कारक

वैयक्तिक कारक

वैयक्तिक का सम्बन्ध कर्मचारी से होता है। इसके शील गुण था भौतिक पक्ष व्यवसायिक संतुष्टि को निश्चय ही प्रभावित करता है, इसके अन्तर्गत अधोलिखित प्रमुख है –

- **अहम् धारणा**
- **लिंग**
- **आयु**
- **बुद्धि**
- **आकांक्षा स्तर**
- **शिक्षा**
- **व्यक्तित्व**

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

- **कार्य से सम्बन्धित कारक–** इसके अन्तर्गत निम्न कारक आते है
- **कार्य की प्रकृति**
- **व्यावसायिक संरचना**
- **भौगोलिक दशायें**
- **व्यवस्था से सम्बन्धित कारक–** इसके अनेक महत्वपूर्ण पक्ष है।
- **वेतन**
- **पदोन्नति**
- **उत्तरदायित्व की भावना**
- **शिक्षक कृत्य संतोष के आयाम**
- **वेतन अथवा अन्य उपलब्धियॉ**
- **प्रधानाध्यापक व शिक्षक का सम्बन्ध**
- **व्यवसाय**
- **संस्था की व्यवस्था**
- **सामूहिक सहयोग की भावना**
- **सक्रियता व क्षमता का उपयोग**

अध्ययन की आवश्यकता –

शोध का तात्पर्य किसी नवीन वस्तु या ज्ञान के नवीन सिद्धान्तों के आधार पर अन्वेषण करना है, जिसका उद्देश्य सरल एवं सुव्यवस्थित विधियों द्वारा किसी क्षेत्र की प्रमुख समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करना है। आज समाज में सबसे दयनीय स्थिति शिक्षक की है क्योंकि वह सदैव स्वाभिमान, सम्मान और गौरव के साथ जीना चाहता है। उसने सदैव देना सीखा है, लेना नहीं।

अतः शिक्षक त्रिदेव कहा जाता है, लेकिन उसे मिलने वाली सुविधायें नगण्य है। अतः मानसिक रूप से अपने कार्यों से असंतुष्ट रहता है। प्राथमिक शिक्षक अपने साधन, वातावरण एवं क्षमताओं की सीमा देखकर उन्नति के शिखर पर चढ़ने के लिए सोचने लगता है जिससे व्यवसायिक असंतुष्टि बढ़ती रहती है।

समस्या कथन –

''गैरसरकारी प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत विवाहित एवं अविवाहित महिला शिक्षकों के व्यवसायिक कार्य संतुष्टि का अध्ययन''

अध्ययन का उद्देश्य–

1. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत विवाहित एवं अविवाहित महिला शिक्षकों की व्यवसायिक कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना ।
2. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत विवाहित एवं अविवाहित महिला शिक्षकों की व्यवसायिक कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

षोध परिकल्पना–

1. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत विवाहित एवं अविवाहित महिला शिक्षकों की व्यवसायिक कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत विवाहित एवं अविवाहित महिला शिक्षकों की व्यवसायिक कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

समस्या का परिसीमन–

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन लखनऊ जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों तक सीमित है।
2. प्रस्तुत शोध में लखनऊ जिले के 25 गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों को षामिल किया गया है।
3. प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राथमिक स्तर पर कार्यरत 100 महिला शिक्षकों का ही चयन किया गया है।
4. प्रस्तुत शोध में महिला शिक्षकों के व्यवसायिक कार्य संतुष्टि के मापन के लिए डी0 मुथा एवं पी0 कुमार द्वारा निर्मित व्यवसायिक कार्य संतुष्टि मापनी का प्रयोग करके निष्कर्ष प्राप्त किया गया है।

सम्बन्धित साहित्य–

केवल मानव ही एक ऐसा प्राणी है, जो सदियों से एकत्र किये ज्ञान का लाभ उठा सकता है। मानव ज्ञान के तीन पक्ष होते है। ज्ञान या प्रज्ञा को संकलित करना, एक दूसरे तक पहुँचाना और ज्ञान में वृद्धि करना। यह तथ्य शोध में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। जो यथार्थता के समीप आने के लिए लगातार प्रयासरत रहता है।

मारिस एलिजाबेथ (1979) ने नगरीय एवं उपनगरीय माध्यमिक विद्यालयों के षिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि एवं व्यवसायिक असंतुष्टि का अध्ययन किया और अध्ययन में पाया कि नगरीय षिक्षक, उपनगरीय षिक्षकों से अधिक संतुष्ट थे। षिक्षक वेतन विसंगतियों और संसाधनों के उपलब्धता के आधार पर भी संतुष्ट और असंतुष्ट थे।

आनन्द (1980) ने व्यवसायिक संतुष्टि का मूल्यों एवं लिंग के सन्दर्भ में अध्ययन किया। राजनैतिक, धार्मिक तथा सौन्दर्यपरक मूल्य का व्यवसायिक संतुष्टि से सकारात्मक सम्बन्ध था।

रेड्डी तथा रेड्डी (1980) ने अध्यापकों के व्यवसायिक संतुष्टि का अध्ययन किया। इसमें शहरी तथा ग्रामीण अध्यापकों के व्यवसायिक संतुष्टि का अध्ययन किया गया। इसके अलावा व्यवसायिक संतुष्टि एवं चिन्ता के बीच सहसम्बन्ध को ज्ञात किया गया। इससे यह ज्ञात हुआ कि वे अध्यापक व्यवसाय के प्रति कम संतुष्ट थे जो अधिक चिन्तित थे।

बार्बरन (1980) ने प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर पर कार्य करने वाले षिक्षकों के व्यवसाय संतुष्टि से संबंधित अध्ययन किया और इस अध्ययन में अध्यापक तथा अध्यापिकाओं दोनों को सम्मिलित किया गया। इसमें आयु, लिंग तथा षिक्षण अनुभव आदि चरों को सम्मिलित किया। इस अध्ययन से पता चला कि अधिक अनुभवी अध्यापक कम अनुभवी अध्यापकों की तुलना में अपने कार्य से अधिक संतुष्ट थे।

गोयल (1981) ने महिला एवं पुरूष प्रषिक्षक अध्यापकों के व्यवसाय संतुष्टि का अध्ययन किया। व्यवसायिक संतुष्टि का अध्ययन, दृष्टिकोंण, सामंजस्य एवं रूचि के सन्दर्भ में किया गया। इस अध्ययन में यह ज्ञात हुआ कि षिक्षण के प्रति दृष्टिकोंण तथा सामंजस्य का व्यवसायिक संतुष्टि के साथ सार्थक सम्बन्ध है। इसके अलावा यह ज्ञात हुआ कि रूचि का व्यवसाय संतुष्टि के साथ सार्थक सम्बन्ध नही है।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

शैक्षिक शोध के प्रकार

1. **ऐतिहासिक शोध** – ऐतिहासिक शोध से तात्पर्य ऐसे शोध से होता है जिसमें बीती घटनाओं को रिकार्ड किया जाता है। ऐतिहासिक शोध मूलतः 'क्या था' (What was) का वर्णन करता है।
2. **विवरणात्मक शोध** – इस शोध में वर्तमान हालातों को रेकार्ड किया जाता है, उनका विश्लेषण एवं व्याख्या की जाती है। इस शोध में मूल रूप से 'क्या है' (What is) का वर्णन करता है।
3. **प्रयोगात्मक शोध** – प्रयोगात्मक शोध में कुछ चरों को नियंत्रित किया जाता है, कुछ चरों को परिचालित किया जाता है एवं दूसरे चर पर उसके पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। ऐसे शोधों में मूलतः इस बात का अध्ययन किया जाता है कि चरों को नियंत्रित करने एवं उनका परिचालन करने का प्रभाव क्या होगा।

शोध विधि – प्रयुक्त शोध उद्देश्यों की पूर्ति हेतु 'गैर प्रयोगात्मक या वर्णनात्मक सर्वेक्षण या मानवषास्त्रीय अध्ययन' विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध अभिकल्प – प्रस्तुत शोध का उद्देश्य लखनऊ जिले में स्थित प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत विवाहित एवं अविवाहित महिला शिक्षकों के व्यवसायिक कार्य संतुष्टि के मापन के लिए डी0 मुथा एवं पी0 कुमार द्वारा निर्मित व्यवसायिक कार्य संतुष्टि मापनी का प्रयोग करके निष्कर्ष प्राप्त किया गया है।

जनसंख्या –शषोध में जनसंख्या का अर्थ भिन्न होता है। जनसंख्या से तात्पर्य सम्पूर्ण इकाईयों के निरीक्षण से होता है। इसमें कुछ ईकाईयों का चयन करके न्यादर्ष बनाया जाता है। प्रस्तुत शोध में लखनऊ जिले के गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालय के समस्त महिला शिक्षकों को जनसंख्या के रूप में परिभाषित किया गया है।

न्यादर्श – प्रस्तुत शोध हेतु संबंधित जनसंख्या के अन्तर्गत लखनऊ जिले में स्थित गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत समस्त विवाहित एवं अविवाहित महिला शिक्षकों के आंकड़े एकत्र करना मुश्किल कार्य था। सुविधा की दृष्टि से समस्त जनसंख्या से कुछ को न्यादर्श हेतु चुना गया। न्यादर्श का चयन करते समय यह ध्यान रखा गया कि चयनित न्यादर्श समस्त जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करें। इसके लिए पहले लखनऊ जिले के गैर सरकारी (ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र) प्राथमिक विद्यालयों का तत्पश्चात् विवाहित एवं अविवाहित महिला शिक्षकों का चयन किया गया।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय–विधियाँ– इस शोध के अन्तर्गत निम्नलिखित सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया।

मध्यमान – गैर सरकारी (ग्रामीण एवं शहरी) प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत विवाहित एवं अविवाहित महिला शिक्षकों के व्यावसायिक कार्य संतुष्टि के माध्य स्तर को ज्ञात करने के लिए प्राप्तांकों के मध्यमान ज्ञात किये गये।

मध्यमान ज्ञात करने के लिए सूत्र –

$$\text{मध्यमान } M = \frac{\sum x}{N}$$

मानक विचलन – शिक्षकों की वैयक्तिक विभिन्नता तथा t परीक्षण की गणना के लिए सभी प्राप्तांकों का मानक विचलन ज्ञात किया गया है।

IJAMSR
International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

मानक विचलन ज्ञात करने के लिए सूत्र –

मानक विचलन SD =√ Σ(x- M) 2/ N

t परीक्षण या अनुपात – इसके द्वारा दो माध्यों के बीच के अन्तर की सार्थकता की जाँच करने के लिए प्रयोग किया जाता है। t परीक्षण ज्ञात करने के लिए सूत्र –

t = √ x1 - x2/σD

तालिका

चुने गये प्राथमिक विद्यालयों एवं अध्यापकों की संख्या–तालिका में प्रस्तुत है–

गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालय ग्रामीण एवं षहरी क्षेत्र

क्र.सं.	विद्यालय का नाम	न्यादर्ष शिक्षकों की सं0
1	सरस्वती ज्ञान विद्या मन्दिर, मोहनलालगंज	4
2	आदर्श पटेल इण्टर कालेज, हरौनी	4
3	ए0पी0ए0 पब्लिक स्कूल, बन्थरा	4
4	आजाद पब्लिक स्कूल, पिपरसण्ड	4
5	कमल दिल्ली पब्लिक स्कूल, नरायनपुर	4
6	आर0डी0 पब्लिक स्कूल बन्थरा	4
7	एस0आर0 मेमोरियल ज्ञात निकेतन, बन्थरा	4
8	लखनऊ मॉडल पल्लिक इण्टर कालेज,	4
9	आश्रम एकेडमी स्कूल, बी0के0टी 01	4
10	मास्टर पब्लिक स्कूल, बी0के0टी	4
11	लखनऊ पब्लिक एकेडमी, बी0के0टी	4
12	दी सिटी स्कूल, बी0के0टी	4
13	प्रभात शिक्षण संस्थान, पिपरसण्ड	4
14	पायनियर प्राथमिक स्कूल, पी0जी0आई0	4
15	गांधी बापू माण्टेसरी स्कूल, चौक	4
16	जी0एस0 कान्वेन्ट स्कूल, नटकुर	4
17	अवध कॉलिजिएट, दरोगाखेड़ा	4
18	आदर्श पटेल इण्टर कालेज, हरौनी	4
19	कमल दिल्ली पब्लिक स्कूल, नरायनपुर	4
20	आजाद पब्लिक स्कूल, पिपरसण्ड	4
21	नवयुग रेडियन्स, राजेन्द्र नगर	4

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

22	जवाहर लाल इण्टर कालेज, गोमतीनगर	4
23	भारत एकेडमी पब्लिक स्कूल, आलमबाग	4
24	लखनऊ मॉडल पब्लिक स्कूल, रकाबगंज	4
25	इण्डियन पब्लिक इ0का0 पूरननगर, आलमबाग	4

परिकल्पना –1

षहरी क्षेत्र की विवाहित एवं अविवाहित महिला शिक्षकों की व्यवसायिक कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका –1

षहरी क्षेत्र की विवाहित एवं अविवाहित महिला शिक्षकों की व्यवसायिक कार्य संतुष्टि संबंधी परिणाम।

समूह	संख्या	मध्यमान	मनक थ्वचलन	ℐ	सर्थकता
षहरी महिला विवाहित	50	20.44	4.48	*3.2	0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थक
षहरी महिला अविवाहित	50	18.8	3.97		

*0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थक

तालिका.1 से स्पष्ट है कि षहरी क्षेत्र की विवाहित महिला शिक्षकों की व्यवसायिक कार्य संतुष्टि का मध्यमान 20. 44, षहरी क्षेत्र की अविवाहित महिला शिक्षकों की व्यवसायिक कार्य संतुष्टि के मध्यमान 18.8 से 1.64 अधिक है।

अतः सार्थकता के लिए निकाले गये t अनुपात का मान *3.2 है, जो 0.05 विश्वास के स्तर पर प्राप्त मान 1.98 से अधिक है।

अतः इन दोनों समूहों के मध्यमानों मे सार्थक अन्तर है।

परिकल्पना –2

ग्रामीण क्षेत्र के विवाहित एवं अविवाहित महिला शिक्षकों की व्यवसायिक कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका –2

ग्रामीण क्षेत्र के विवाहित एवं अविवाहित महिला शिक्षकों की व्यवसायिक कार्य संतुष्टि संबंधी परिणाम।

समूह	संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	ℐ	सर्थकता
ग्रामीण विवाहित	50	22.32	4.19	*4.92	0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थक
ग्रामीण अविवाहित	50	24.88	3.67		

*0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थक

तालिका.2 से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र की विवाहित महिला शिक्षकों की व्यवसायिक कार्य संतुष्टि का मध्यमान 22.32, अविवाहित महिला शिक्षकों के मध्यमान 24.88 से 2.56 कम है।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

अतः सार्थकता के लिए निकाले गये t अनुपात का मान *4.92 है, जो 0.05 विश्वास के स्तर पर प्राप्त मान 1.98 से अधिक है।

अतः इन दोनों समूहों के मध्यमानों मे सार्थक अन्तर है।

इससे स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र की विवाहित एवं अविवाहित महिला शिक्षकों की व्यवसायिक कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।

निष्कर्ष–

1. परिणामों से स्पष्ट होता है कि लखनऊ जिले के प्राथमिक विद्यालयों की अविवाहित महिला शिक्षकों का व्यवसायिक कार्य संतुष्टि विवाहित महिला शिक्षकों से अच्छा है। इसकी पुष्टि विवाहित एवं अविवाहित महिला शिक्षकों के व्यवसायिक कार्य संतुष्टि के माध्यों के सन्दर्भ में निकाले गये t के मान से होता है।
2. परिणामों से स्पष्ट होता है कि लखनऊ जिले के शहरी क्षेत्र की विवाहित महिला शिक्षकों की व्यवसायिक कार्य संतुष्टि ग्रामीण क्षेत्र की विवाहित महिला शिक्षकों से अच्छा है। इसकी पुष्टि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की विवाहित महिला शिक्षकों के व्यवसायिक कार्य संतुष्टि के माध्यों के सन्दर्भ में निकाले गये t के मान से होता है।
3. परिणामों से स्पष्ट होता है कि लखनऊ जिले के ग्रामीण क्षेत्र की अविवाहित महिला शिक्षकों की व्यवसायिक कार्य संतुष्टि शहरी क्षेत्र की अविवाहित महिला शिक्षकों से अच्छा है। इसकी पुष्टि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की अविवाहित महिला शिक्षकों के व्यवसायिक कार्य संतुष्टि के माध्यों के सन्दर्भ में निकाले गये t के मान से होता है।

सुझाव–

1. इस अध्ययन में केवल महिला शिक्षकों को संयुक्त रूप से सम्मिलित किया गया है। अध्ययन को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए महिला शिक्षकों की तुलना पुरूष शिक्षकों से की जा सकती है।
2. प्राथमिक स्तर के विद्यालयों के शैक्षिक स्तर को बढ़ाने में अध्यापकों के व्यवसायिक संतुष्टि का अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- षर्मा, डा. रामनाथ(1969)– मनोविज्ञान का इतिहास, लक्ष्मी नारायण प्रकाषन, आगरा।
- शर्मा, श्रद्धा (1996) : जबलपुर नगर निगम के रानी दुर्गावती वि0 प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत वि0 शिक्षक/शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि व सामाजिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।
- षास्त्री, आर0के0, (2003), शिक्षा मनोविज्ञान सांख्यिकी तथा मापन, सूर्या पब्लिकेशन, दिल्ली।
- षर्मा, आर.ए.(2010)– षिक्षा अनुसंधान, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
- हकीम,एम.ए. एवं अस्थाना(1975)– मनोविज्ञान षोध विधियां, विनोद पुस्तक मंदिर।
- सक्सेना, प्रेमलता(1990)– उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के व्याख्याताओं की अध्यापन कार्य संतुष्टि को प्रभावित करने वाले तत्वों का अध्ययन।
- सुखिया, एस.पी(2005).– षैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर, रांगेय राघव मार्ग, आगरा।
- सिंह, तिलक(2006)– नवीन षोध विज्ञान, मोतीलाल बनारसी दास।
- हकीम,एम.ए. एवं अस्थाना(1975)– मनोविज्ञान षोध विधियां, विनोद पुस्तक मंदिर।